101 इल्मे ग़ैब और रसूल सल्ल0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफे अल्लाह तआला के लिए है, जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफ़ी चाहते हैं।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल0 पर, आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि पर
व बअ्द!

उम्मते मुस्लिमा के एक गिरोह का यह अक़ीदा है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 आलिमुल गैब हैं। कायनात में कोई चीज़ आप सल्ल0 से पोशीदा नहीं, उन्हें हर चीज़ व हर बात का इल्म है।

इस फ़ोल्डर में हम अल्लाह के रसूल सल्ल0 के तीन ज़मानों
(1) नबुवत से पहले (2) नबुवत मिलने के बाद और
(3) आप सल्ल0 की वफ़ात के बाद का ज़िक्र करेंगे और जानेंगे कि इस बारे में 'कुरआन व हदीस' हमें क्या बतलाते हैं?

(1) नबुवत से पहले का ज़माना

(1) इर्शादे बारी तआला है "हमने अपने हुक्म से एक रूह तेरी तरफ भेजी तुझको यह भी मालूम नहीं था कि किताब (कुरआन) क्या चीज़ है? और न ईमान के बारे में पता था।" (सूरह शूरा–आयत–52)

(2) ऐ नबी सल्ल0! आप पश्चिमी तरफ नहीं थे, जब हमने मूसा (अलैहि0) को हुक्म भेजा और न इस वाकिए को देखने वाले थे। हमने बहुत सी नस्लें पैदा की, फिर उन पर एक लम्बा अरसा गुज़रा और तू (ऐ नबी सल्ल0) मदयन वालों में नहीं रहता था कि उन्हें हमारी आयतें सुनाता मगर हम रसूल भेजते रहे और तू (ऐ नबी सल्ल0) 'तूर' के करीब न था, जब हमने आवाज़ दी मगर यह तेरे रब का इनाम है ताकि उन लोगों को डराए, जिनके पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं आया।
(सूरह क़सस–आयत–44 से 46)

(3) "और तुम्हें (ऐ नबी सल्ल0) उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी, मगर तुम्हारे रब ने मेहरबानी की।"
(क़सस–आयत–86)

(4) "यह ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम आपकी तरफ वहय कर रहें हैं, और तुम उन के पास नहीं थे जब वह कुरआ डाल रहे थे कि मरयम का कफ़ील किसे बनाया जाए और तुम उस वक़्त भी मौजूद नहीं थे, जब वोह आपस में झगड़ रहे थे।" (आले इमरान–आयत–44)

(5) "ऐ नबी सल्ल0 यह सब ग़ैब की ख़बरें हैं जो 'वहय' के जरियें हम आपकों बता रहें हैं। तुम उस वक़्त मौजूद नहीं थे जब युसुफ (अलैहि0) के भाईयों ने (उन्हें खत्म करने का) फैसला किया था।" (युसुफ – आयत –102)

(2) ज़माना ए नबुवत

यानि 'नबी बनाए जाने से लेकर दुनिया से रूख़सत होने तक का ज़माना' इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने गुज़रे ज़मानों, कब्र व बरज़ख़ के हालात पुल सिरात व मैदाने मेहशर, जन्नत व जहन्नम की कैफियत वग़ैरह के बारे में बहुत

सा इल्म जो आप सल्ल0 की शायाने शान था आप सल्ल0 को अता किया मगर यह सही नहीं कि यह इल्म पाकर नबी सल्ल0 'आलिमुल ग़ैब' हो गये। क्योंकि इर्शादे बारी है "अल्लाह के सिवा आसमानों व ज़मीन में कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता और उन्हें इसकी भी ख़बर नहीं कि वोह कब उठाये जाएंगे?" **(नम्ल–आयत–65)**

कुरआन व हदीसे रसूल सल्ल0 से हवाला जात–

(1) 'वाकिया इफ़क' यानि आएशा रज़ि.पर बदकारी के इल्ज़ाम का मामला जिसकी हकीकत का इल्म 'वहय' आने से पहले रसूल सल्ल0 को न हुआ। **(नूर–आयत–16 से 26 – बुख़ारी–4141)**

(2) 'शहद का वाकिया' जिसमें आप सल्ल0 की दो बीवियों ने मिलकर प्लान बनाया। जिसके नतीजे में आप सल्ल0 ने शहद को अपने आप पर हराम कर लिया। बाद में अल्लाह ने आप सल्ल0 को सारी बात बताई। **(तहरीम–आयत–1 से 4 – बुख़ारी – 4912)**

(3) अल्लाह के सिवाए कोई नहीं जानता कि उसे उठाया कब जाएगा। **(नम्ल–आयत–65)**

(4) 'पांच ग़ैब' अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। **(लुक़मान–आयत–34)**

(5) क़यामत कब आएगी? आप सल्ल0 को मालूम न था।

(आराफ़–आयत–187– ताहा–15 – अहज़ाब–63 – शूरा–17)

(6) अल्लाह के लश्करों को अल्लाह के सिवाए कोई नहीं जानता। **(मुदस्सर–आयत–31)**

(7) मदीना में और उसके आस – पास कुछ मुनाफ़िक हैं, आप उनको नहीं जानते, हम जानते हैं। **(तौबा–आयत–101)**

(8) रसूल सल्ल0 का आसमानों पर जाना और जिब्रील अलैहि0 से बार–बार पूछना कि यह कौन है? यह कौन है?

(मुस्लिम–415 – बुख़ारी–349,4233– इब्ने माजा–1399)

(9) आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मैने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी 'बैतुल्लाह' का तवाफ़ कर रहा है। मैंने पूछा कि यह साहब कौन हैं? तो फ़रिश्तों ने बतलाया कि ईसा (अलैहि0) हैं। फिर मैंने एक और शख़्स को देखा कि तवाफ़ कर रहा है तो मैने फिर पूछा कि यह कौन हैं? फरिश्तों ने बताया कि यह 'दज्जाल' है।" **(बुख़ारी–3439 – 6999 – मुस्लिम–426 – 7362)**

(10) आएशा रज़ि. ने फ़रमाया कि 'जो शख़्स भी तुमसे यह तीन बातें कहे, वह झूटा है – (1) रसूल सल्ल0 ने अपने रब को देखा

(2) रसूल सल्ल0 ग़ैब (आने वाले कल) की बात जानते थे और

(3) रसूल सल्ल0 ने तब्लीगे दीन में कोई बात छिपाई थी।'

(बुख़ारी–4855 – मुस्लिम – 439 – तिर्मिज़ी – 3068)

(11) दोज़ख में आंकड़े होंगे। उनकी लम्बाई व चौढ़ाई को अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। **(मुस्लिम–451 – बुख़ारी–6573)**

(12) एक सफ़र में आएशा रज़ि. का हार गुम हो गया। रसूल सल्ल0 और सहाबा किराम ठहर गए। अबु बकर रज़ि. अपनी बेटी आऐशा रज़ि. पर काफी गुस्सा हुए। बाद में जब वह ऊंट खड़ा किया गया, जिस पर आएशा रज़ि. बैठी थीं , तो हार उसी के नीचे से मिल गया।

(मुस्लिम–816 – बुख़ारी–334 – 3672)

(13) रसूल सल्ल0 ने कुरआन के 70 आलिम सहाबा की एक जमाअत कुरआन सिखाने के लिए भेजी थी, जिन्हें मुश्रिकीन ने शहीद कर डाला। **(मुस्लिम–1545 – बुख़ारी–4095 –1300)**

(14) आएशा रजि. कहती हैं कि एक दिन रसूल सल्ल० जिस वक्त मेरे पास : उस वक्त मेरे पास एक औरत बैठी थी। आप सल्ल० ने पूछा कि यह कौन है मैंने बताया कि यह फला औरत हैं।
(मुस्लिम–1834 – बुखारी–43 – इब्ने माजा–4238 – नसाई–5050
(15) आएशा रजि. का बयान है कि रसूल सल्ल० जब बादल का कोई ऐसा टु देखते, जिससे बारिश की उम्मीद होती । तो आप सल्ल० के चेहरे का रंग ब जाता और फरमाते "मैं नहीं जानता, मुमकिन है यह बादल भी वैसा ही हो जि बारे में कौमें आद ने कहा था कि यह बादल हम पर बारिश करने वाला है, हाला उसमें दर्द नाक अजाब था।" (मुस्लिम–2085 – इब्ने माजा–3891 बुखारी–3206)
(16) एक दफा सूरज गहन हुआ तो रसूल सल्ल० बहुत घबराए, इस डर से कि क कयामत न कायम हो जाए। (मुस्लिम–2117 – बुखारी–1059)
(17) एक सहाबी फौत हो गए, लेकिन रसूल सल्ल० को इसकी खबर किसी ने न दी। एक दिन आप सल्ल० ने फरमाया "वह शख्स दिखाई नहीं देता? तो सहा ने अर्ज़ किया कि उसका तो इन्तेकाल हो गया। आप सल्ल० ने फरमाया फिर तुम मुझे क्यों नहीं बताया? चलो मुझे उसकी कब्र दिखा दो।" (मुस्लिम–2215 बुखारी–458)
(18) एक रात अबुज़र गफारी रजि. ने देखा कि रसूल सल्ल० अकेले चले जा र हैं तो वह आप सल्ल० के पीछे हो लिये। जब आप सल्ल० को मेहसूस हुआ कि को आ रहा है, तो पूछा कि कौन है? उन्होंने बतलाया कि मैं अबूज़र।" (मुस्लिम–230 – बुखारी–6443)
(19) दो औरतें रसूल सल्ल० के दरवाज़े पर आई। उन्होंने बिलाल रजि. से कह कि हमारे लिए यह मसअला रसूल सल्ल० से मालूम करें और हमारा नाम न लें बिलाल रजि. अन्दर गए और अर्ज़ किया कि दो औरतें यह मसअला मालूम करती हैं तो आप सल्ल० ने कहा कि यह दो औरते कौन हैं? उन्होंने बताया कि ज़ैनब नाम की हैं। तो आप सल्ल० ने फरमाया "कौन सी ज़ैनब?"
(मुस्लिम–2318 – बुखारी – 1466 – इब्ने माजा–1834)
(20) रसूल सल्ल० ने फरमाया "मैं अपने घर जाता हूँ। वहां मुझे मेरे बिस्तर पर खजूर पड़ी मिलती है। मैं उसे खाने के लिए उठा लेता हूँ। लेकिन फिर यह डर होता है कि कहीं यह सदके की न हो? तो मैं उसे फैक देता हूँ। (मुस्लिम–2476 – बुखारी–2432)
(21) रसूल सल्ल० की खिदमत में कोई खाने की चीज लाई जाती तो आप सल्ल० मालूम करते कि यह तोहफा है या सदका?
(मुस्लिम–2491 – बुखारी–2576)
(22) हज के मौके पर रसूल सल्ल० ने सहाबा किराम रजि. से फरमाया "तुम हलाल हो जाओ (यानि एहराम खोल दो) अगर वह बात मुझे पहले मालूम हो जाती, जो बाद में हुई तो मैं कुर्बानी का जानवर साथ न लाता।" (मुस्लिम–2931–बुखारी–1568)
(23) 'फत्ह मक्का' के दिन एक आदमी ने आकर खबर दी कि इब्ने खतल गिलाफे कअबा के पर्दों से लटक रहा है, तो आप सल्ल० ने फरमाया "उसे कत्ल कर दो।"
(मुस्लिम–3308 – बुखारी–3044)
(24) रसूल सल्ल० ने अब्दुर्रहमान बिन औफ रजि पर जर्दी का निशान देखा तो पूछा कि यह क्या है? उन्होंने बतलाया कि मैंने निकाह किया है।
(मुस्लिम–3494–बुखारी–5155)
(25) सहाबा रजि ने कैदी औरतों (लौंडियों) से 'अज़ल' किया। फिर इसका हुक्म

रसूल सल्ल0 से मालूम किया तो आप सल्ल0 ने फरमाया "क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? क्या तुम वाकई ऐसा करते हो? (मुस्लिम–3546–बुखारी–5210)

(26) रसूल सल्ल0 आएशा रज़ि के घर आए तो वहां एक साहब को बैठे हुए देखा पूछा आएशा यह कौन हैं? तो उन्होंने बताया कि यह मेरा रज़ाई (दूध शरीक)भाई है।" (मुस्लिम–3606 –बुखारी–2647)

(27) जाबिर रज़ि का बयान है कि एक दफ़ा मैं बीमार पड़ा तो रसूल सल्ल0 और अबुबकर रज़ि दोनों पैदल चलकर मेरी अयादत को आए। मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 मै। अपने माल में क्या करूं? आप सल्ल0 ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया। यहां तक कि मीरास की आयत (निसा–11) नाज़िल हुई। (मुस्लिम–4146 – बुख़ारी –4577)

(28) नौमान बिन बशीर रजि. बयान करते हैं कि उनके वालिद उन्हें नबी सल्ल0 के पास लेकर गए और अर्ज़ किया कि मैंने अपने इस बेटे को एक गुलाम बतौर हिबा (तो हफ़ा) दिया हैं । आप सल्ल0 ने मालूम किया कि क्या ऐसा ही गुलाम दूसरे बेटो को भी दिया है? उन्होंने बताया कि नहीं तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया (इससे भी) वापिस ले लो।" (मुस्लिम–4177 – बुखारी–2586)

(29) जंगे बदर के दिन रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि "कौन देख कर आएगा कि अबु जहल का क्या हुआ? इब्ने मसऊद रजि. मालूम करने गए तो देखा कि अफ़रा के दो लड़कों ने उसे कत्ल कर डाला है और उसका जिस्म ठन्डा पड़ा है। (मुस्लिम–4662 – बुखारी 3962)

(30) उम्मुल मोमिनीन मैमूना रजि. ने भुना हुआ सांडा आप सल्ल0 को खाने के लिए पेश किया। इससे पहले कि आप सल्ल0 खाना शुरू करते आपको बताया गया कि यह सांडा है आप सल्ल0 ने अपना हाथ सांडे से हटा लिया। ख़ालिद रजि. ने पूछा कि क्या यह हराम है? आप सल्ल0 ने फ़रमाया नहीं (मुस्लिम–5035 – बुख़ारी–5537)

(31) एक यहुदी औरत रसूल सल्ल0 की ख़िदमत में बकरी का गोश्त लाई जिसमें ज़हर मिला था। आप सल्ल0 ने उसमें से कुछ खाया बाद में उस औरत ने इकरार किया कि इसमें ज़हर मिलाया था। आप सल्ल0 ने उस जहर का असर सारी जिन्दगी अपने तालू में मेहसूस किया। (मुस्लिम–5705 – बुख़ारी –2617 – अबुदाऊद –4508)

(32) एक यहूदी रसूल सल्ल0 के पास हाज़िर हुआ और शिकायत की कि आप के साथियों में से एक ने मुझे तमांचा मारा है। आप सल्ल0 ने पूछा कि किसने? (मुस्लिम – 6153 –बुखारी – 2412 –अबुदाऊद–4671)

(33) रसुल सल्ल0 ने मूसा अलैहि और ख़िज्र अलैहि का लम्बा किस्सा बयान करते हुए फरमाया "अल्लाह मूसा (अलैहि0) पर रहम फ़रमाए। अगर वह कुछ देर और सब्र करते तो उन दोनों के और वाकिआत हमारे इल्म में आते (मुस्लिम–6163 – बुखारी–122)

(34) रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया मेअराज की रात मैं जन्नत में गया। वहां मैंने एक महल देखा तो पूछा कि यह किसके लिए है? फ़रिश्तों ने बतलाया कि यह उमर रज़ि के लिए है।
(मुस्लिम – 6198 – बुख़ारी – 5226)

(35) गज़वा ए ख़न्दक के दिन रसल सल्ल0 ने फ़रमाया "दुश्मन के लश्कर की ख़बर मेरे पास कौन लेकर आएगा? तो ज़ुबैर रजि. ने कहा कि मैं (मुस्लिम–6243 – बुख़ारी–2846)

(36) रसूल सल्ल0 ने अपनी बेटी उम्मे कुलसुम रजि. की वफ़ात पर अश्क भरी

आंखों से सहाबा रजि. से पूछा कि "लोगों तुम में कोई ऐसा भी है जो आज रात औरत के पास न गया हो? अबु तल्हा रजि. ने कहा कि मैं तो आप सल्ल० ने उन्हें कब्र में उतरने का हुक्म दिया।
(बुख़ारी–1342)
(37) रसूल सल्ल० ने फातिमा रजि. के आंगन में बैठ कर पूछा कि वह बच्चा (हसन रजि.) कहां है?(मुस्लिम–6257 – बुख़ारी – 5884)
(38) एक शख़्स जो रात में दफ़्न कर दिया गया था। आप सल्ल० ने उस (ताज़ा) क़ब्र के पास खड़े हो कर पूछा कि यह किसकी क़ब्र है?(बुख़ारी–1336)
(39) उसमान बिन मज़ऊन रजि. के जनाज़े के पास खड़े हो कर आप सल्ल० ने फ़रमाया "अल्लाह की कसम" मैं अल्लाह का रसूल हूँ मगर मैं यह नहीं जानता कि मेरे साथ क्या मामला होगा? और तुम्हारा क्या हाल होगा? (बुख़ारी–7018–1243)
(40) रसूल सल्ल० ने फ़रमाया "क़यामत के दिन मैं अर्श के नीचे आऊंगा और अल्लाह के हूज़ूर सज्दे में गिर पड़ूंगा फिर अल्लाह की ऐसी हम्द व सना बयान करूंगा कि आज मैं उस पर कुदरत नहीं रखता। उसी मौके पर वह हम्द मुझे अल्लाह सिखाएगा।"(मुस्लिम–475 – बुख़ारी –6565)
(41) एक वफ्द आप सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल० ने पूछा यह कहां का वफ्द और कौन सी जमाअत है? वफ्द वालों ने बताया खानदाने रबीआ।
(मुस्लिम–115 – बुख़ारी–53)
(42) आप सल्ल० ने इरादा किया (अपनी बीवी) हज़रते सफिया रजि० से जो मर्द को अपनी बीवी से होता है, उन्होंने बतलाया कि मैं 'हैज़' से हूँ।(मुस्लिम–3227)
(43) "ग़ैब की कुन्जियां उसी (अल्लाह) के पास है, जिनको उसके सिवाए कोई नहीं जानता। ज़मीन जंगल और समन्दर की सब चीज़ो का इल्म उसी के पास है कोई पत्ता भी झड़ता है तो उसके इल्म में होता है।" (अनआम–आयम–59)
(44) (ऐ मुहम्मद सल्ल०) यह किस्से ग़ैब की ख़बरों में से है। हम जिसकी वहय तुम्हारी तरफ भेज रहे हैं। इससे पहले न तुम इन बातों को जानते थे और न तुम्हारी कौमें जानती थी।" (हूद–आयत–49)
(45) "इस कुरआन के नाज़िल होने से पहले इस वाकिए की आपको ख़बर नहीं थी।(युसुफ–आयत–03)

फौत होने के बाद का ज़माना

"जिस दिन अल्लाह तमाम रसूलों को जमा करेगा। तब इर्शाद फरमाएगा कि तुम को क्या जवाब दिया गया। तब वह अर्ज़ करेंगे कि हमें मालूम नहीं। बेशक तू और सिर्फ तू ही ग़ैब (छिपी हुई बातों) का जानने वाला है।"(माइदा–आयत–109)
(1) एक औरत अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आई। आप सल्ल० ने उससे कहा कि फिर (कभी) आना। वह बोली कि मैं आऊँ और आप सल्ल० न मिलें (यानि आप सल्ल० की वफात हो जाए) तो? आप सल्ल० ने फरमाया "अगर मैं न हुआ तो अबु बकर (रजि.) के पास आना।" (बुखारी–7220)
(2) हज़रत उमर रजि. के ज़माने में जब कहत (सूखा) पड़ता तो वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रजि. के ज़रिये दुआ करते और कहते कि "या अल्लाह। हम पहले तेरे पास नबी सल्ल० का वसीला लाया करते थे और तू पानी बरसाता था। अब (जब वह फोत हो गए तो) उनके चचा का वसीला लाए हैं, हम पर बारिश बरसा।" (बुखारी'1010)
(3) "मैं कयामत के दिन अपने हो ज़े कौसर पर हूंगा। जो शख़्स वहां आएगा, वह उसमें से पीयेगा और जो उसमें से पी लेगा, उसे फिर प्यास नही लगेगी। कुछ लोग हौज़ पर ऐसे आएंगे, जिन्हें मै पहचानता हूँगा और वोह मुझे। फिर मुझ में और उनमें आड़ कर दी जाएगी मैं कहूँगा कि यह तो मेरे उम्मती हैं। इर्शाद होगा कि तुम नहीं

जानते, इन्होंने तुम्हारे बाद क्या–क्या नई बातें (दीन में) निकाली। तब मैं कहूँगा जिसने मेरे बाद दीन बदल डाला, वोह दूर हों, दूर हों।" **(बुख़ारी–6583)** (यानि आज अल्लाह के रसूल सल्ल0 नहीं जानते है कि इस उम्मत के कौन–कौन लोग दीन में रद्दो बदल कर रहे हैं।)

(4) कयामत के दिन मेरी उम्मत के कुछ लोग लाए जाएंगे फरिश्ते उन्हें पकड़ कर बाईं तरफ वालों (जहन्नमियों) में ले जाएंगे। मैं अर्ज़ करूंगा कि ऐ रब! यह तो मेरे उम्मती हैं। इर्शाद होगा कि तुम नहीं जानते कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या–क्या किया? उस वक़्त मैं वही कहूंगा जो अल्लाह के नेक बन्दे ईसा (अलैहि0) ने कहा "मैं जब तक इन लोगों में रहा, इनका हाल देखता रहा। इर्शाद होगा कि यह लोग अपनी एड़ियों के बल इस्लाम से फिरे रहे, जब तू (सल्ल0) इनसे जुदा हुआ।" **(मुस्लिम–7201 – बुखारी–3349)**

(5) फिक्ह हनफ़ी की मशहूर किताबों में यह मसअला लिखा है कि "जिस शख़्स ने किसी औरत से निकाह किया और यह कहा कि हम अल्लाह को और उसके रसूल सल्ल0 को गवाह बनाते हैं, तो वह काफ़िर हो जाएगा और इसकी वजह यह लिखी है कि उस शख़्स ने रसूल सल्ल0 को 'आलिमुल गैब' जाना। हालांकि 'इल्मे ग़ैब' अल्लाह के लिए ख़ास है।" **(दुर्रे मुख़्तार–जिल्द 2 सफ़ा–14)**

"जो कोई यह दावा करे कि रसूल सल्ल0 इल्मे ग़ैब जानते हैं, तो वह काफ़िर है।" अल्लाह के इस फ़रमान की वजह से "आसमानों व ज़मीन में कोई ग़ैब की बात नहीं जानता, मगर अल्लाह"**(अनआम–आयत–65(मुक़दमा हिदाया–उर्दू–सफ़ा–59))** मुल्ला अली कारी हनफ़ी रह0 फरमाते हैं "जो लोग नबी सल्ल0 को ग़ैब दान जानते हैं,

हनफ़ी इमामों ने उनके कुफ्र की तसरीह की हैं।"

इसके अलावा यह कि (1) कयामत कब आएगी?

(2) बारिश (कब, कहां और कितनी होगी?) सिर्फ अल्लाह जानता है।

(3) मां के पेट में बच्चे की हालत को सिर्फ अल्लाह जानता है।

(4) कोई जानदार नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा? और

(5) कोई यह भी नहीं जानता कि उसे कब और कहां मौत आएगी। मगर अल्लाह को इन बातों का इल्म है।" **(लुक़मान –आयत–34)**

इतना ही नहीं अल्लाह तआला ने रसूल सल्ल0 से फरमाया कि "आप कह दीजिए कि जो अल्लाह चाहता है वही हो कर रहता है। मैं तो अपने नफ़े–नुक्सान का भी मालिक नहीं। अगर मुझे ग़ैब (छिपी हुई बातों) का इल्म होता तो मैं सब नफ़ा समेट लेता और मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचती।" **(आराफ़ –आयत–188)**

कुरआन व हदीस के इन वाज़ेह दलाइल और खुद फिक्ह हनफ़ी की रू से यह साबित हुआ कि 'इल्में ग़ैब' अल्लाह के सिवाए किसी को नहीं और अल्लाह के रसूल सल्ल0 को नबुवत से पहले, नबुवत मिलने के बाद ग़ैब का इल्म नहीं था और न अब दुनिया से रूख़सत हो जाने के बाद है।

अल्लाह से दुआ है कि वह हमारी ख़ताओं व गुनाहों को दर गुजर फरमाए। बुरे साथियों व बुरे उलैमा के शर से बचाए और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए।

आमीन!

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
9214836639,9887239649